13 वर्ष (2013-2025)

आईएएस मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

प्रश्नोत्तर रूप में

प्रश्न-पत्र I

विगत वर्षों के अध्यायवार

हल प्रश्न-पत्र

इन प्रश्न-पत्रों का हल यूपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पाठ्यक्रम के अनुरूप किया गया है। यह पुस्तक सभी राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं एवं अन्य समकक्ष परीक्षाओं हेतु भी समान रूप से उपयोगी हैं।

संपादकः एन. एन. ओझा

हलः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

13 वर्ष (2013-2025)

आईएएस मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

प्रश्न-पत्र I प्रश्नोत्तर रूप में

विगत वर्ष (PYQ) अधयायवार हल प्रश्न-पत्र

बुक कोडः 480

संस्करण 2026

मूल्यः ₹170

ISBN : 978-81-995968-3-2

प्रकाशक

क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.

कॉरपोरेट ऑफिसः

ए-1डी, सेक्टर-16, नोएडा-201301 (उ.प्र.)
फोन नं. : 0120-2514610, मो. नं. : 9999056644
E-mail : info@chronicleindia.in

सर्वाधिकार सुरक्षित © क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.: इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

पुस्तक में प्रकाशित सामग्री उपरोक्त विषय पर प्रकाशित पुस्तकों/जर्नल/रिपोर्ट/ऑनलाइन कंटेंट आदि से संकलित है। लेखक/संकलनकर्ता/प्रकाशक, प्रकाशित सामग्री की मूल लेखन का दावा नहीं करता। प्रकाशित सामग्री को पूर्णतः त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया गया है, फिर भी किसी भी प्रकार के त्रुटि के लिए क्षतिपूर्ति का दावा प्रकाशक/लेखक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। शंका की स्थिति में पाठक स्वयं भारत सरकार के दस्तावेज व अन्य स्रोतों के माध्यम से जांच कर सकते हैं
सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

अनुक्रमणिका

सामान्य अध्ययन

I. प्रथम प्रश्न-पत्र

1. भारत एवं विश्व का इतिहास 3-32

- 18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक का आधुनिक भारतीय इतिहास-महत्वपूर्ण घटनाएं, व्यक्तित्व, विषय।
- स्वतंत्रता संग्राम-इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति/उनका योगदान।
- स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन।
- विश्व के इतिहास में 18वीं सदी की घटनाएं यथा औद्योगिक क्रांति, विश्व युद्ध, राष्ट्रीय सीमाओं का पुन: सीमांकन उपनिवेशवाद, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राजनीतिक दर्शन शास्त्र जैसे साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद आदि शामिल होंगे, उनके रूप और समाज पर उनका प्रभाव।

2. भारतीय विरासत एवं संस्कृति 33-48

- भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला के रूप, साहित्य और वास्तुकला के मुख्य पहलू शामिल होंगे।

3. समाज 49-80

- भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएं, भारत की विविधता।
- महिलाओं की भूमिका और महिला संगठन, जनसंख्या एवं सम्बद्ध मुद्दे, गरीबी और विकासात्मक विषय, शहरीकरण, उनकी समस्याएं और उनके रक्षोपाय।
- भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का प्रभाव।
- सामाजिक सशक्तीकरण, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और धर्म-निरपेक्षता।

4. भातर एवं विश्व का भूगोल 81-132

- विश्व के भौतिक-भूगोल की मुख्य विशेषताएं।
- विश्वभर के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण (दक्षिण एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप को शामिल करते हुए), विश्व (भारत सहित) के विभिन्न भागों में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिए जिम्मेदार कारक।
- भूकंप, सुनामी ज्वालामुखीय हलचल, चक्रवात आदि जैसी महत्वपूर्ण भू-भौतिकीय घटनाएं, भूगोलीय विशेषताएं और उनके स्थान-अति महत्वपूर्ण भूगोलीय विशेषताओं (जल-स्रोत और हिमावरण सहित) और वनस्पति एवं प्राणि-जगत में परिवर्तन और इस प्रकार के परिवर्तनों के प्रभाव।

1 भारत एवं विश्व का इतिहास

प्र. राज्यतन्त्र, अर्थ व्यवस्था, शिक्षा और अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विषय में आजादी के प्रारम्भिक काल में भारत के सुदृढीकरण की प्रक्रिया को रेखांकित कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: 1947 के बाद के शुरुआती वर्ष भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे। एक नवस्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उसे विभाजन, गरीबी, अशिक्षा और वैश्विक शीत युद्ध की राजनीति जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल के नेतृत्व ने संस्थाओं का निर्माण, राजनीतिक एकीकरण, आर्थिक पुनर्गठन, शिक्षा सुधार और स्वतंत्र विदेश नीति के माध्यम से भारत की नींव मजबूत की।

राजनीति

- **रियासतों का एकीकरण:** सरदार पटेल और वी. पी. मेनन ने कूटनीति और दृढ़ता से 560 से अधिक रियासतों का विलय कराया, जैसे हैदराबाद (1948) और जूनागढ़ (1947)।
- **संविधान का अंगीकरण (1950):** भारत को सार्वभौम, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाया गया और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार लागू हुआ।
- **संस्थाओं का निर्माण:** निर्वाचन आयोग (1950) और योजना आयोग (1950) जैसी मजबूत संस्थाएं स्थापित की गईं।
- **प्रथम आम चुनाव (1951-52):** विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक अभ्यास, जिसने लोकतांत्रिक वैधता को सुदृढ़ किया।

अर्थव्यवस्था

- **कृषि सुधार:** जमींदारी उन्मूलन अधिनियमों द्वारा सामंती भूमि व्यवस्था समाप्त कर कृषकों को सशक्त किया गया।
- **औद्योगिक नीति संकल्प, 1956:** मिश्रित अर्थव्यवस्था पर बल, जिसमें मुख्य उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्र की प्रधानता रही।
- **पंचवर्षीय योजनाएं:** प्रथम योजना (1951-56) में कृषि और सिंचाई को प्राथमिकता; द्वितीय योजना (1956-61) महालनोबिस मॉडल से प्रेरित होकर औद्योगीकरण पर केंद्रित।
- **सामुदायिक विकास कार्यक्रम (1952):** ग्रामीण अवसंरचना और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया।

शिक्षा और सामाजिक नीति

- **विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49, राधाकृष्णन आयोग):** उच्च शिक्षा में सुधार की सिफारिशें।
- **माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53, मुदालियार आयोग):** विद्यालयी शिक्षा को सुदृढ़ किया।
- **आईआईटी और एम्स की स्थापना:** आधुनिक तकनीकी और चिकित्सकीय शिक्षा की नींव रखी।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार:** सीएसआईआर और परमाणु ऊर्जा आयोग (1948) की स्थापना, होमी भाभा के नेतृत्व में।
- **सामाजिक सुधार:** हिंदू कोड बिल (1955-56) ने विवाह, उत्तराधिकार और संपत्ति अधिकारों में लैंगिक न्याय को आगे बढ़ाया।

अंतरराष्ट्रीय संबंध

- **गुटनिरपेक्ष नीति:** नेहरू के नेतृत्व में भारत ने शीत युद्ध गुटों में शामिल होने से परहेज किया और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का संस्थापक बना।
- **पंचशील समझौता (1954):** चीन के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का सिद्धांत, हालांकि 1962 में इसकी परीक्षा हुई।
- **उपनिवेशवाद विरोधी समर्थन:** एशिया और अफ्रीका के स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन किया।
- **संयुक्त राष्ट्र में सहभागिता:** शांति स्थापना अभियानों और परमाणु निरस्त्रीकरण पर वैश्विक बहसों में सक्रिय भूमिका निभाई।

निष्कर्ष: भारत का प्रारंभिक एकीकरण राजनीतिक एकता, आर्थिक योजना, सामाजिक सुधार और स्वतंत्र विदेश नीति से चिह्नित था। भारी चुनौतियों के बावजूद इस काल में रखी गई नींव ने भारत को एक स्थिर लोकतंत्र, मिश्रित अर्थव्यवस्था और वैश्विक मंच पर सम्मानित स्वर के रूप में उभरने में सक्षम बनाया।

प्र. समकालीन विश्व के लिए फ्रांसीसी क्रान्ति की निरंतर प्रासंगिकता है। स्पष्ट कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: 1789 की फ्रांसीसी क्रांति विश्व इतिहास में एक मील का पत्थर थी। राजतंत्र, सामंतवाद और असमानता के विरुद्ध उत्पन्न हुई इस क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को अभिव्यक्त किया। इसके प्रभाव आज भी राजनीतिक व्यवस्थाओं, सामाजिक आंदोलनों और वैश्विक मानदंडों को आकार देते हैं, जिससे यह 21वीं सदी में भी प्रासंगिक बनी हुई है।

राजनीतिक आदर्श

- **लोकतंत्र और गणतंत्रवाद:** क्रांति ने निरंकुश राजतंत्र को समाप्त कर जनसत्ता की स्थापना की। आज अधिकांश आधुनिक राष्ट्र संवैधानिक शासन और नागरिक सहभागिता पर आधारित हैं।
- **मानव अधिकार:** "मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा" आगे चलकर मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948) जैसी चार्टर का आधार बनी।
- **धर्मनिरपेक्षता:** क्रांति ने चर्च के प्रभुत्व को सीमित किया और धर्मनिरपेक्ष राज्यों की नींव रखी, जिसका प्रतिबिंब भारत के संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता में भी दिखता है।

2 भारतीय विरासत एवं संस्कृति

प्र. हडप्पा कालीन वास्तुकला के विशेष पहलुओं को चर्चा कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता (ई.पू. 2500-1750), जिसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है, अपनी अद्वितीय नगरीय योजना और वास्तुकला उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और अन्य स्थलों की खुदाई से अत्यंत परिष्कृत डिजाइन, निर्माण और नागरिक प्रबंधन का प्रमाण मिलता है, जो समकालीन संस्कृतियों में अनुपम है।

हड़प्पा वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएं

नगरीय योजना

- शहरों को ग्रिड पैटर्न पर बनाया गया था, जहां सड़कें समकोण पर मिलती थीं।
- दुर्ग (प्रशासनिक/धार्मिक क्षेत्र) और निचला नगर (आवासीय क्षेत्र) का स्पष्ट विभाजन।

निर्माण सामग्री

- मानकीकृत पकी हुई ईंटों का व्यापक उपयोग (अनुपात 1:2:4)।
- धोलावीरा में पत्थर का प्रयोग, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कच्ची ईंटें सामान्य थीं।

आवासीय वास्तुकला

- घरों में प्राय: आंगन, कई कमरे, निजी कुएं और नालियां होती थीं।
- बड़े घर सामाजिक विभाजन का संकेत देते हैं।

सार्वजनिक वास्तुकला

- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के अन्नागार अधिशेष भंडारण और राज्य नियंत्रण को दर्शाते हैं।
- मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार धार्मिक और नागरिक महत्व को इंगित करता है। बड़े सभा भवन और स्तंभयुक्त हॉल प्रशासनिक या सार्वजनिक बैठकों का संकेत देते हैं।

जल प्रबंधन

- ढकी हुई नालियों और सोख-पिट्स के साथ उन्नत जल निकासी प्रणाली।
- धोलावीरा के जलाशय जल-प्रौद्योगिकी कौशल को दर्शाते हैं।

किलेबंदी और नगर दीवारें

- रक्षा और बाढ़ नियंत्रण हेतु मोटी ईंटों की दीवारें।

निष्कर्ष: हड़प्पा वास्तुकला एक अत्यंत संगठित, समानतावादी और नागरिक-उन्मुख शहरी संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है। उनकी कार्यक्षमता, मानकीकरण और जनकल्याण पर बल तकनीकी परिष्कार के साथ-साथ सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी को भी उजागर करता है। यह विश्व की सबसे प्राचीन और उन्नत नगरीय सभ्यताओं में से एक का प्रमाण है।

प्र. अकबर के धार्मिक समन्वयता के प्रमुख पहलुओं का परीक्षण कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: अकबर का शासनकाल (1556-1605) मुगल धार्मिक सहिष्णुता का शिखर माना जाता है। अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न, अकबर ने विभिन्न आस्थाओं का मिश्रण कर साम्राज्य में सद्भाव और स्थिरता स्थापित करने हेतु सांप्रदायिक विभाजनों से ऊपर उठकर धार्मिक समन्वय को बढ़ावा दिया।

अकबर के धार्मिक समन्वय के प्रमुख पहलू

सुल्ह-ए-कुल (सार्वभौमिक शांति) की नीति

- सभी धार्मिक समूहों के प्रति सहिष्णुता, सम्मान और समान व्यवहार पर बल।
- गैर-मुसलमानों पर जजिया कर और तीर्थ कर समाप्त किया।

अंतरधार्मिक संवाद

- फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना (पूजा गृह) की स्थापना।
- मुस्लिम उलेमा, हिंदू पंडित, जैन साधु, जोरास्ट्रियन और ईसाई मिशनरियों के बीच वाद-विवाद आयोजित किए।

दीन-ए-इलाही (1582 ई.)

- इस्लाम, हिंदू धर्म, जोरास्ट्रियन और ईसाई धर्म के तत्वों का मिश्रण।
- नैतिक आचरण, सम्राट के प्रति निष्ठा, शाकाहार और संकीर्ण रूढ़िवादिता का त्याग पर बल।
- यद्यपि इसके अनुयायी कम थे, यह अकबर की आध्यात्मिक एकता की दृष्टि का प्रतीक था।

हिंदू-मुस्लिम समन्वय

- राजपूतों से वैवाहिक संबंध और उन्हें उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया।
- दीवाली उत्सव, कला और वास्तुकला में फारसी-हिंदू मिश्रण, तथा संस्कृत ग्रंथों (जैसे महाभारत, रामायण) का फारसी में अनुवाद।

तर्कवाद और नैतिक शासन

- अंधविश्वास पर प्रश्न उठाकर तर्क को प्रोत्साहित किया।
- धार्मिक सहिष्णुता को राजनीतिक स्थिरता और साम्राज्य के एकीकरण से जोड़ा।

निष्कर्ष: अकबर का धार्मिक समन्वय केवल आध्यात्मिक नहीं बल्कि गहराई से राजनीतिक था-विविध साम्राज्य को सहिष्णुता के एकीकृत भाव से संगठित करने हेतु। यद्यपि दीन-ए-इलाही उनकी मृत्यु के बाद लुप्त हो गया, सुल्ह-ए-कुल की विरासत ने भारत की मिश्रित सांस्कृतिक पहचान की नींव रखी।

3

समाज

प्र. भारत में स्मार्ट शहर, शहरी गरीबी और वितरणात्मक न्याय के मुद्दों को कैसे संबोधित करता है?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: 2015 में शुरू किया गया स्मार्ट सिटी मिशन कुशल, समावेशी और सतत शहरी केन्द्रों के विकास का लक्ष्य रखता है। तकनीक और अवसंरचना से आगे बढ़कर यह शहरी गरीबी को संबोधित करने और वितरणात्मक न्याय को बढ़ावा देने का प्रयास करता है, ताकि सेवाओं और अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित हो सके।

शहरी गरीबी का समाधान

- **सस्ती आवास व्यवस्था:** इन-सीटू स्लम पुनर्विकास और किफायती किराए के मकान जैसी पहलें निम्न आय वर्ग की जीवन स्थितियों में सुधार करती हैं।
- **मूलभूत सेवाएं:** जल, स्वच्छता, बिजली और कचरा प्रबंधन की उपलब्धता स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाती है और गरीबों के जीवन-यापन की लागत घटाती है।
- **सार्वजनिक परिवहन:** कुशल और किफायती शहरी परिवहन यात्रा खर्च कम करता है और रोजगार व शिक्षा तक पहुंच बढ़ाता है।
- **कौशल विकास और रोजगार:** व्यावसायिक प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम हाशिए पर रहने वाले समुदायों को बेहतर रोजगार अवसरों तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं।

वितरणात्मक न्याय को बढ़ावा

- **डेटा-आधारित शासन:** स्मार्ट सिटी प्लेटफॉर्म वास्तविक समय के आंकड़ों का उपयोग कर संसाधनों का कुशल और पारदर्शी आवंटन करते हैं, जिससे रिसाव और भ्रष्टाचार कम होता है।
- **समावेशी शहरी योजना:** सुलभ सार्वजनिक स्थलों, स्वास्थ्य केन्द्रों और सामुदायिक सुविधाओं का डिजाइन सभी नागरिकों के लिए समान पहुंच सुनिश्चित करता है।
- **डिजिटल समावेशन:** ई-गवर्नेंस पहलें सेवाओं को नागरिकों के निकट लाती हैं, जिससे हाशिए पर रहने वाले समूह बिना भेदभाव लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष: भारत में स्मार्ट सिटी तकनीक, योजना और सहभागी शासन को एकीकृत कर शहरी गरीबी को कम करने और वितरणात्मक न्याय को बढ़ावा देने की क्षमता रखती हैं। यद्यपि क्रियान्वयन में चुनौतियां बनी हुई हैं, ये पहलें समावेशी शहरी विकास का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, जिससे आधुनिकीकरण के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंच सकें।

प्र. भारत में सिविल सेवा का लोकाचार व्यावसायिकता और राष्ट्रवादी चेतना के संयोजन का प्रतीक है स्पष्ट कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: भारतीय सिविल सेवा, जिसे शासन की रीढ़ कहा जाता है, अपना आचारतंत्र दोहरे संकल्प से प्राप्त करती है: पेशेवर दक्षता और राष्ट्रीय चेतना। यह द्वैत सुनिश्चित करता है कि प्रशासक अपने कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करें और साथ ही राष्ट्र-निर्माण के व्यापक उद्देश्यों में योगदान दें।

सिविल सेवा में पेशेवर दक्षता

- **योग्यता और क्षमता:** प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से भर्ती यह सुनिश्चित करती है कि सक्षम व्यक्ति सेवा में आएं।
- **निष्पक्षता और तटस्थता:** सिविल सेवक नीतियों को राजनीतिक या व्यक्तिगत विचारों से परे रहकर लागू करते हैं।
- **कानून का शासन और जवाबदेही:** कानूनों, प्रक्रियाओं और नैतिक मानकों का पालन प्रशासन में निष्पक्षता सुनिश्चित करता है।
- **कुशलता और सेवा वितरण:** परिणाम-उन्मुख शासन पर बल सार्वजनिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करता है।

राष्ट्रीय चेतना

- **जनकल्याण के प्रति प्रतिबद्धता:** सिविल सेवक समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक न्याय की दिशा में कार्य करते हैं।
- **संवैधानिक मूल्यों की रक्षा:** लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और संघीय सिद्धांतों की रक्षा उनके कार्य का केंद्रीय हिस्सा है।
- **राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा:** नीतियां और कार्य विविध समुदायों को एकीकृत करने और अपनत्व की भावना को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य रखते हैं।
- **दीर्घकालिक राष्ट्र-निर्माण दृष्टि:** सिविल सेवक अल्पकालिक प्रशासनिक कर्तव्यों को राष्ट्र के दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों से जोड़ते हैं।

निष्कर्ष: भारतीय सिविल सेवा का आचारतंत्र पेशेवर दक्षता और देशभक्ति कर्तव्य का समन्वय है। तकनीकी क्षमता को राष्ट्र के प्रति गहरी जिम्मेदारी के साथ जोड़कर सिविल सेवक सुनिश्चित करते हैं कि शासन कुशल, नैतिक और भारत की लोकतांत्रिक एवं समावेशी प्रगति की व्यापक दृष्टि के अनुरूप हो।

प्र. महात्मा जोतीराव फुले के समाज सुधार प्रयासों और लेखन ने समाज के लगभग सभी उपेक्षित तबकों की समस्याओं को छुआ है। चर्चा कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

4

भारत एवं विश्व का भूगोल

प्र. गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियां क्या हैं? ये गतिविधियां भारत में भौगोलिक विशेषताओं से किस प्रकार संबंधित है? उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: प्राथमिक गतिविधियां वे होती हैं जो सीधे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करती हैं। कृषि प्रमुख गतिविधि है, लेकिन गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियां जैसे खनन, मत्स्य पालन और वानिकी भी भारत की अर्थव्यवस्था और आजीविका प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियां

- **खनन और पत्थर खदानें:** कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट और चूना पत्थर का उत्खनन।
- **मत्स्य पालन:** समुद्री और अंतर्देशीय मछलियों का शिकार।
- **वानिकी:** लकड़ी, बांस, औषधीय पौधों और अन्य वन उत्पादों का दोहन।
- **शिकार और संग्रहण (जनजातीय क्षेत्रों में):** यद्यपि घट रहा है, दूरस्थ क्षेत्रों में जारी है।

भौतिक संरचनात्मक विशेषताओं से संबंध

- पठार और खनिज पट्टियां
- छोटा नागपुर पठार (झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़) कोयला, लौह अयस्क और अभ्रक से समृद्ध है।
- कुद्रेमुख (कर्नाटक) लौह अयस्क खनन के लिए प्रसिद्ध है।
- राजस्थान का पठारी क्षेत्र संगमरमर और चूना पत्थर की खदानों का समर्थन करता है।

तटीय क्षेत्र और जल निकाय

- भारत की 7,500 किमी लंबी तटरेखा बड़े पैमाने पर मत्स्य पालन को सहारा देती है, विशेषकर केरल, गुजरात और आंध्र प्रदेश में।
- अंतर्देशीय मत्स्य पालन गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों तथा हिराकुंड जैसे जलाशयों में फलता-फूलता है।

पर्वतीय और वन क्षेत्र

- हिमालय और पश्चिमी घाट समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय वनों से समृद्ध हैं, जो लकड़ी, बांस और औषधीय जड़ी-बूटियां प्रदान करते हैं।
- उत्तर-पूर्व भारत के घने वन वन उत्पादों और झूम खेती से जुड़ी वानिकी के माध्यम से आजीविका का समर्थन करते हैं।

निष्कर्ष: भारत में गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियां भौतिक संरचनात्मक विशेषताओं से गहराई से जुड़ी हैं। पठार खनिज प्रदान करते हैं, तट मत्स्य पालन को सहारा देते हैं और पर्वत वानिकी को पोषित करते हैं। ये गतिविधियां कृषि को पूरक करती हैं और विशिष्ट क्षेत्रों की आर्थिक रीढ़ बनती हैं।

प्र. उपयुक्त उदाहरणों के साथ, भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन के पारिस्थितिक और आर्थिक लाभों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता होने के नाते भारत को बढ़ती ऊर्जा मांग और पर्यावरणीय चिंताओं की दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सौर ऊर्जा, जो प्रचुर और नवीकरणीय है, पारिस्थितिक और आर्थिक दोनों लाभ प्रदान करती है, जिससे यह भारत की सतत विकास रणनीति का केंद्र बनती है।

पारिस्थितिक लाभ

- **कार्बन पदचिह्न में कमी:** सौर ऊर्जा जीवाश्म ईंधन का विकल्प बनकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करती है। उदाहरण: भादला सौर पार्क (राजस्थान, 2,245 मेगावाट) प्रतिवर्ष लाखों टन CO_2 को रोकता है।
- **वायु गुणवत्ता में सुधार:** कोयला आधारित संयंत्रों के विपरीत, सौर ऊर्जा कणीय पदार्थ या सल्फर डाइऑक्साइड का उत्सर्जन नहीं करती।
- **जल संरक्षण:** सौर पीवी को थर्मल और हाइड्रो ऊर्जा की तुलना में न्यूनतम जल की आवश्यकता होती है।
- **जलवायु परिवर्तन शमन:** सौर ऊर्जा को अपनाना भारत की पेरिस समझौते की प्रतिबद्धताओं के अनुरूप है।

आर्थिक लाभ

- **ऊर्जा सुरक्षा:** सौर ऊर्जा आयातित कोयला और तेल पर निर्भरता कम करती है।
- **लागत दक्षता:** घटती सौर दरें (₹2-2.5 प्रति kWh) इसे थर्मल ऊर्जा से सस्ता बनाती हैं।
- **रोजगार सृजन:** सौर क्षेत्र पैनल निर्माण, स्थापना और संचालन में नौकरियां पैदा करता है।
- **निवेश और नवाचार:** अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) जैसी पहलें वैश्विक निवेश आकर्षित करती हैं।
- **ग्रामीण विद्युतीकरण:** विकेंद्रीकृत सौर समाधान दूरस्थ गांवों को सशक्त करते हैं।

निष्कर्ष: भारत में सौर ऊर्जा पारिस्थितिक सुरक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण दोनों का साधन है। यह उत्सर्जन घटाकर, संसाधनों का संरक्षण कर और रोजगार उत्पन्न कर सतत विकास को समर्थन देती है।